25/I

2002

HINDI

Paper – I

(Literature)

Time : 3 Hours] *[Maximum Marks : 300*

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt *five* questions, choosing at least *two* from each Section.

All questions carry equal marks.

Answers must be written in Hindi.

खण्ड - A

1. प्राचीन हिंदी का परिचय देते हुए उसकी व्याकरणगत प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए ।

2. मध्यकालीन साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी का परिचय दीजिए ।

3. देवनागरी लिपि के विकास को समझाते हुए हिंदी भाषा के मानकीकरण पर प्रकाश डालिए ।

4. स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रभाषा के रूप में उपयोगी सिद्ध हुई हिंदी के विकास का विवेचन कीजिए ।

5. हिंदी की किन्हीं तीन प्रमुख बोलियों का परिचय देते हुए उनके अंत: संबंध को स्पष्ट कीजिए ।

खण्ड - B

6. भक्तिकालीन साहित्य का सामान्य परिचय देते हुए कबीर के काव्य के आधार पर उनका समाज सुधारक रूप स्पष्ट कीजिए ।

7. प्रगतिवादी काव्य की महत्वपूर्ण विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

8. यथार्थवादी हिंदी उपन्यासों के विकास का विवेचन कीजिए ।

9. नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए ।

10. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

(क) रीतिकालीन साहित्य में शृंगारिकता ।

(ख) भारतेंदु युगीन साहित्य का स्वरूप ।

(ग) छायावादी काव्य में प्रकृति-चित्रण ।

(घ) हिंदी रंगमंच का विकास ।

2002

HINDI

Paper – II

(Literature)

Time : 3 Hours] *[Maximum Marks : 300*

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt question *1* which is compulsory and any *four* of the remaining questions selecting *two* from each Section.

The number of marks carried by each questions is indicated at the end of the questions.

Answers must be written in Hindi.

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **चार** की मार्मिक व्याख्या कीजिए, साथ ही काव्यत्व-व्यंजक उपकरणों का उल्लेख भी कीजिए : $20 \times 4 = 80$

(क) राम बिन तन की ताप न जाई
जल मैं अगनि उठी अधिकाई
तुम्ह जलनिधि मैं जल कर मीनाँ,
जल मैं रहौं जलहि बिन षीनाँ ।
तुम्ह प्यंजरा मैं सुवनाँ तोरा
दरसन देहु भाग बड़ मोरा
तुम्ह सतगुर मैं नौतम चेला,
कहै कबीर राम रमूं अकेला ॥

(ख) आयो घोष बड़ो ब्योपारी ।
लादि खेप गुन ज्ञान-जोग की ब्रज में आय उतारी ॥
फाटक दै कर हाटक माँगत भोरै निपट सु धारी ।
धुर ही तें खोटो खायो है लये फिरत सिर भारी ॥
इनके कहे कौन डहकावै ऐसी कौन अजानी ?
अपनो दूध छाँडि को पीवै खार कूप को पानी ॥
ऊधो जाहु सबार यहाँ तें बेगि गहरू जनि लावौ ।
मुँहमाँग्यो पैहो सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावौ ॥

(ग) काम कोह मद मान न मोहा ।
लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ॥
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया ।
तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया ॥
सब के प्रिय सब के हितकारी ।
दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी ॥
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी ।
जागत सोवत सरन तुम्हारी ॥

(घ) "कहती थीं माता मुझे सदा राजीवनयन !
दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पूरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन ।"
कहकर देखा तूणीर ब्रह्मशर रहा झलक,
ले लिया हस्त, लक-लक करता वह महाफलक;
ले अस्त्र वाम कर, दक्षिण कर दक्षिण लोचन
ले अर्पित करने को उद्यत हो गये सुमन ।
जिस क्षण बँध गया बेधने को दृग दृढ़ निश्चय
काँपा ब्रह्माण्ड, हुआ देवी का त्वरित उदय : —

(ङ) कविता में कहने की आदत नहीं, पर कह दूँ
वर्तमान समाज में चल नहीं सकता
पूँजी से जुड़ा हुआ हृदय बदल नहीं सकता
स्वातंत्र्य व्यक्ति का वादी
छल नहीं सकता मुक्ति के मन को
जन को ।

(च) जहाँ न धर्म न बुद्धि नहिं नीति न सुजन-समाज ।
ते ऐसहि आपुहि नसैं, जैसे चौपटराज ॥

खण्ड - A

2. ''जीवन को उन्नत, सार्थक और प्रकाशमान बनाने के लिए सच्चे गुरु का मिलना आवश्यक है'' — कबीर की साखियों के आधार पर स्पष्ट कीजिए । 55

3. 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड में पुत्र, पति और भाई के रूप में प्राप्त राम का चरित्र-चित्रण कीजिए । 55

4. ''सूरदास में जितनी सहृदयता और भावुकता है, प्रायः उतनी ही चतुरता और वाग्विदग्धता भी है'' — 'भ्रमरगीत' के आधार पर स्पष्ट कीजिए । 55

5. 'कामायनी' महाकाव्य की प्रतीक-योजना का विवेचन कीजिए । 55

6. '' 'राम की शक्ति पूजा' में राम के जरिए कवि का आत्म-संघर्ष प्रकट हुआ है'' — मीमांसा कीजिए । 55

खण्ड - B

7 'अंधेर नगरी' नाटक की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । 55

8. भारतीय किसान जीवन की दयनीय गाथा के रूप में 'गोदान' उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए । 55

9. ''शुक्लजी के निबंधों में वैचारिक पक्ष सर्वत्र विद्यमान है'' — 'चिंतामणि' के आधार पर स्पष्ट कीजिए । 55

10. 'चंद्रगुप्त' नाटक में अभिव्यक्त प्रसाद जी के इतिहास और राष्ट्रप्रेम का सोदाहरण विवेचन कीजिए । 55

11. 'शेखर एक जीवनी' के आधार पर शेखर की चारित्रिक विशेषताओं का परिचय दीजिए । 55

(छ) मगध के स्वतंत्र नागरिकों को बधाई है । आज आप लोगों के राष्ट्र का नवीन जन्म दिवस है । स्मरण रखना होगा कि ईश्वर ने सब मनुष्यों को स्वतंत्र उत्पन्न किया है, परंतु व्यक्तिगत स्वतंत्रता वहीं तक दी जा सकती है, जहाँ दूसरों की स्वतंत्रता में बाधा न पड़े । यही राष्ट्रीय नियमों का मूल है ।

(ज) जिस प्रकार सुखी होने का प्रत्येक प्राणी को अधिकार है, उसी प्रकार मुक्तातंक होने का भी । पर कर्म-क्षेत्र के चक्रव्यूह में पड़कर जिस प्रकार सुखी होना प्रयत्न-साध्य होता है उसी प्रकार निर्भय रहना भी । निर्भयता के सम्पादन के लिए दो बातें अपेक्षित होती हैं — पहली तो यह कि दूसरों को हमसे किसी प्रकार का भय या कष्ट न हो, दूसरी यह कि दूसरे हमको कष्ट या भय पहुँचाने का साहस न कर सकें ।